B.Ed. IInd Year

Subject :- Knowledge, Language & Curriculum

Topic :- बालकों का लेखन विश्लेषण

इन विधियों का उपयोग छात्रों को वर्णों तथा अक्षरों को लिखना सिखाने के लिए किया जाता है।

1 मॉण्टेसरी विधि

इस विधि में आँख, कान आदि ज्ञानेन्द्रियों और हाथ तीनों से सहायता ली जाती है। बालक पहले अक्षरों को देखता है, उनकी ध्वनियों को कानों से सुनता है और रेगमाल आदि के अक्षरों पर अँगुली फेरता है। इस प्रकार वह अक्षरों के स्वरूप से परिचित होकर, उनको लिखना सीख जाता है।

2 पेस्टालॉजी विधि

पेस्टालॉजी विधि में वर्णों की आकृति को खण्ड-2 करके, उनका अभ्यास कराया जाता है। — जैसे —

(क) cccc, २ २ २ २ स स स स

शिक्षक तख्ती पर, स्लेट पर, श्यामपट पर या बालक की अभ्यास पुस्तिका पर ऐसे खण्ड बना देता है और बालक उन्हें देख-2 कर लिखता है। कई सुलेख की पुस्तिकाओं में ऐसे खण्ड बने होते हैं।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

3. जैकटाट विधि

सर्वप्रथम जैकटाट नामक शिक्षाशास्त्री ने इस विधि का प्रतिपादन प्रस्तुत किया था। बालक इस विधि में स्वयं संशोधन करता है। बालको ने जो पाठ पढ़ा होता है, उसका कोई वाक्य अध्यापक लिखकर देता है और भूल से मिलाकर देखा जाता है। यदि कोई अशुद्धि हो, तो उसे ठीक कर लेता है। इस प्रकार बालक शब्दो का मिलान करता हुआ, वह पूरा वाक्य लिखने का अभ्यास करता है।

4. अनुकरण विधि

अनुकरण विधि के दो प्रकार होते है —

(a) कपरेखा अनुकरण

कपरेखा अनुकरण के अन्तर्गत कुछ मुद्रित पुस्तिकाएँ ऐसी होती है, जिनमे अक्षर अथवा वाक्य बिन्दु रूप मे लिखे होते है। छात्र उन बिन्दुओ पर पेन्सिल या बॉलपेन फेरता है तथा इसी अभ्यास को करते-करते अक्षरो या शब्दो को लिखना सीख जाता है।

(b). स्वतन्त्र अनुकरण

स्वतन्त्र अनुकरण के अन्तर्गत शिक्षक स्लेट पर, श्यामपट्ट पर, अभ्यास-पुस्तिका पर अक्षर लिख देता है तथा छात्र से कहता है कि उसको देखकर नीचे स्वयं, इसी प्रकार के अक्षर को लिखे।

Scanned with CamScanner